1st Choice

भारतीय मुद्राशास्त्र की प्राचीनता

भारतीय मुद्राशास्त्र की प्राचीनता का इतिहास अत्यन्त विवादास्पद है। अधिकांश विद्वानों का विचार है कि भारत की हड़प्पा सभ्यता में सिक्कों का आविष्कार नहीं हुआ था किंतु 19वीं व 20वीं सदी में मोहनजोदड़ो के क्षेत्र से एक रजत पात्र में आभूषणों के टुकड़े व चाँदी के चिपटे टुकड़े प्राप्त हुए हैं। चाँदी के इन टुकड़ों को R.N. Dixit कालान्तर में प्रचलित आहत सिक्कों का जनक मानते हैं। डी.डी. कौशाम्बी भी इस मत से सहमत हैं और इन टुकड़ों को मुद्रा का प्रारंभ मानते हैं। ~~डी.डी. कौशाम्बी भी इस मत से सहमत हैं और इन टुकड़ों को मुद्रा का प्रारंभ मानते हैं।~~ किंतु अधिकांश विद्वान इस विचार को नहीं स्वीकारते हैं। धातुखण्डों में आकार की समानता न होने की स्थिति तथा ~~समान न होने के कारण~~ भार समान न होने के कारण अधिकतर विद्वान हड़प्पा सभ्यता में सिक्कों के प्रचलन को स्वीकार नहीं करते।

"प्रारंभ में मनुष्य अपनी आवश्यक वस्तु की पूर्ति वस्तु विनिमय के माध्यम से करता था। खाद्य पदार्थों का उत्पन्न करने वाले व्यक्ति को जब कपड़े की आवश्यकता होती थी तो वह खाद्य पदार्थ को कपड़े बनाने वाले को देकर उससे कपड़ा लेता था। धातु बनाने वाले को जब मकान की आवश्यकता होती थी तो वह धातु द्रव्य को मकान बनाने वाले को देकर मकान बनवा लेता था। विनिमय के कार्य में सुविधा करने के लिए मानव समाज में सिक्कों का प्रारंभ हुआ। धातु बनाने वाले को जब खाद्य पदार्थों की आवश्यकता नहीं होती थी तो उस समय जब कृषक अन्न लेकर उसके पास जाता था तो वह धातु द्रव्य के बदले अन्न लेने में

में आगा-पीछा करता था इस अभाव को दूर करने के लिए विनिमय का स्थायी उपकरण का साधन निकाला गया जो सिक्का था। जिस समय मानव समाज में विनिमय के उपकरण स्वरूप धातुओं का व्यवहार आरंभ हुआ था उस समय स्वर्ण-चूर अथवा नियमबद्ध धातुपिण्ड का व्यवहार होता था परंतु शुद्ध धातु की परीक्षा करने व तौलने में अधिक समय लगता था अतः सुविधा के लिए धातुओं के बने सिक्कों का प्रचार प्रारंभ हुआ।

भारतवासी बहुत ही प्राचीनकाल से विनिमय के लिए धातु के बने हुए सिक्कों का व्यवहार करते थे इसका उल्लेख अनेक साहित्यिक ग्रंथों में मिलता है।

भारतीय मुद्रा की प्राचीनता के साक्ष्य

↓

साहित्यिक साक्ष्य | पुरातात्विक साक्ष्य

-> वैदिक साहित्य
-> ब्राह्मण साहित्य
-> संस्कृत साहित्य
-> बौद्ध साहित्य

(1) साहित्यिक साक्ष्य :- भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के विषय में जानकारी प्राचीन साहित्यिक ग्रन्थों से होती है। इन साहित्यिक ग्रंथों में मुद्राशास्त्र का भी उल्लेख है। साहित्यिक ग्रंथों में उल्लेखित विवरण का निम्न प्रकार से अध्ययन कर सकते हैं।

(A) वैदिक साहित्य :- वैदिक साहित्य में मुद्रा का साक्ष्य

Scanned by CamScanner

प्राप्त होता है। ऋग्वेद में उल्लेख है कि रुद्र को विश्वरूप 'निष्क' धारण किए हुए बताया गया है और विश्वरूप से तात्पर्य सम्भवतः अंकित चिन्हों से है और निष्क सम्भवतः एक स्वर्ण सिक्का था जिस पर अनेक चिन्ह अंकित थे। जिसका प्रयोग कभी कभी आभूषण के रूप में भी किया जाता था। अतः भण्डारकर का विचार है कि निष्क चिन्हांकित मुद्रा थी।

ऋग्वेद में उल्लेख है कि गृहवे कक्षीवत को राजा भव्य द्वारा 10 घोड़े और 10 निष्क प्रदान किए गए थे। अथर्ववेद में भी 300 घोड़े 10,000 गौ 10 कण्ठहार के साथ 100 निष्क के उपहार का विवरण मिलता है।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि निष्क आभूषण से रहे होंगे। कीथ और मैकडॉनल निष्क को एक सिक्का मानते हैं लेकिन ऋग्वेद व अथर्ववेद दोनों मे इन निष्कों की

साथ ही न ही इन्हे जारी करने वाले किसी अधिकारिक व्यक्ति का उल्लेख मिलता है।

अतः विद्वानो का विचार है कि निष्क एक निश्चित भार-मान वाले आभूषण रहे होंगे। धीरे-धीरे मुद्राओ ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया होगा। बार्कर भी इस मत से सहमत है। पंचविंश ब्राह्मण मे रजत निष्क का विवरण व्रात्यो के आभूषण के रूप मे मिलता है। गोपथ ब्राह्मण मे भी निष्क का उल्लेख मिलता है। छान्दोग्य उपनिषद मे 100 गौ, अश्व, 1 रथ, 1 गाँव और निष्क के उपहार का वर्णन आया है।

(4)

अतः इस प्रकार वैदिक सा॰ में निष्क का उल्लेख सदैव उपहार के संदर्भ में ही दिखाई देता है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि निष्क कोई साधा॰ आभूषण नहीं था वरन् इसका निश्चय ही भार-मान और मूल्य था। यद्यपि कोई सिक्का रहा होगा परन्तु इसके भार-मान का विवरण वैदिक सा॰ में नहीं मिलता है।

(2) ब्राह्मण साहित्य :- ब्राह्मण सा॰ में भी मुद्रा के साक्ष्य प्राप्त होता है। ब्राह्मण सा॰ में स्वर्ण निर्मित 'शतमान' का उल्लेख प्राप्त होता है। इसमें 'राजसूय यज्ञ' के अवसर पर दो शतमान युक्त रथ को दक्षिणा में देने का वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण में, 'तस्य त्रीणि शतमानि हिरण्यानि दक्षिणा एवं हिरण्यं दक्षिणा, स्वर्ण शतमान तस्याकृम' से शतमान के स्वर्ण निर्मित होने का आभास होता है। भण्डारकर के अनुसार शतमान वृत्ताकार, सिक्का था। भण्डारकर निष्क, सुवर्ण, शतमान, माशक और कार्षापण छः प्रकार के धातु के सिक्को का प्रचलन स्वीकार करते हैं।

कालान्तर में 80 रत्ती भार के सुवर्ण का उल्लेख मिलता है लेकिन यह कहना कठिन है कि यह सुवर्ण ब्राह्मणों में उल्लेखित 80 रत्ती भार वाले स्वर्ण खंड है यह मुद्राओं के समान थे या नहीं।

(भण्डारकर का विचार है कि अनगढ़ धातु 'हिरण्य' कहलाती थी। किंतु जब वह सिक्के के रूप में ढाल दी जाती थी तो वह सुवर्ण कहलाती थी।

तैत्तरीय ब्राह्मण में 'कृष्णल' का उल्लेख आता है। यदि शतमान व कृष्णल को सिक्के न माना जाए तो भी वह निश्चित तौल के धातु खण्ड

थी जिसका ~~उल्लेख~~ प्रयोग क्रय-विक्रय के लिए सिक्के के रूप मे होता था।
वैदिक सा० व ब्राह्मण ग्रन्था० मे निष्क शतमान, सुवर्ण और का उल्लेख शुभ अवसर पर पुजारियो को दी जाने वाली द० के रूप मे हुआ है। आभूषण के रूप में नही। अतः विद्वानो का विचार है कि इसका प्रयोग मुद्रा के रूप मे होता था।

③ संस्कृत साहित्य :- 6 सदी ई-पू के सा० साक्ष्यो में व्यापारिक लेन देन मे सिक्को के प्रयोग का वर्णन मिलता है
पाणिनी की अष्टाध्यायी में नैष्किकम्, द्विनैष्किकम् त्रिनैष्किकम् शब्दो का प्रयोग ऐसी वस्तु के लिए किया गया है - जिनका मूल्य क्रमशः 1 निष्क, 2 निष्क 3 निष्क था। निष्कशतिक तथा निष्कसहस्रिक शब्दो से तात्पर्य क्रमशः 100 निष्क व 1000 निष्क रखने वाले व्यक्ति से था।
पाणिनी और कात्यायन के अनुसार स्वर्ण मुद्रा के रूप मे शतमान, से क्रय की गई वस्तु को शतमान कहते थे। कुछ विद्वानो के अनुसार शतमान के शाब्दिक अर्थ के आधार पर उन्हे 100 भारमान एवं 100 रत्ती भार माना है। परन्तु मनु एवं याज्ञवल्क्य ने इनका भार 1320 रत्ती बताया है।
कात्यायन श्रौत सूत्र से भी ज्ञात होता है कि स्वर्ण शतमान के साथ-2 रजत शतमान भी समाज मे प्रचलित थे।
6 सदी ई-पू के मध्यकाल मे रजत शतमान के प्रयोग का प्रारंभ माना जाता है।
डी० एल० अग्रवाल 175 रत्ती भार वाले सिक्को को ही रजत शतमान मानते है। किन्तु श्री राम

1st Choice

Page No.
Date / /

गोयल शतपथ ब्राह्मण के आधार पर स्वीकार यह स्वीकार नहीं करते हैं।

(4) बौद्ध साहित्य :- बौद्ध ग्रंथों में मुद्रा का विवरण प्राप्त होता है। त्रिपिटक मे कार्षापण व उसके गुणों का उल्लेख है। त्रिपिटक मे कार्षापण, अर्द्ध कार्षापण, पाद कार्षापण, द्विमाशक और, $\frac{1}{16}$ का कार्षापण का विवरण मिलता है -

विनय पिटक, मज्झिम निकाय, अंगुत्तर निकाय मे इसे कहापण कहा गया है। त्रिपिटक मे एक स्थान पर पद में हिरण्य और सुवर्ण दोनों शब्द आये हैं। "पभुतम हिरण्य स सुवरण" पद में हिरण्य शब्द से सोने का एवं सुवर्ण से स्वर्ण नामक सिक्कों का बोध होता है।

अतः उपरोक्त प्रमाणो से यह सिद्ध होता है कि पाणिनी, त्रिपटकों, जातको एवं सूत्रकाल तक मुद्राओं का स्वरूप पूर्ण रूपेण स्पष्ट होता है।
पाणिनी त्रिपटको व
किंतु अधिकांश विद्वान पाणिनी की तिथि 5 सदी ई. पू. त्रिपिटक की तिथि 450 ई. पू. श्रौतसूत्र की तिथि 350 ई. पू. के लगभग स्वीकार करते हैं। इस प्रकार उपरोक्त साक्ष्यों के आधार पर भारतीय सिक्कों की प्रारंभिक तिथि लगभग 700 ई. पू. एवं उसके आस-पास निर्धारित होती है।

(2) पुरातात्विक साक्ष्य :- भारतीय सिक्कों की प्राचीनता का साक्ष्य पुरातात्विक प्रमाण भी है। सिक्कों की प्रारंभिक तिथि 600 ई. पू. होने का प्रमाण पुरातात्विक साक्ष्यों से भी ज्ञात होता है।

Scanned by CamScanner

Est Choice

अतीरंजखेड़ा, कौशाम्बी, राजघाट, रूपड़ हस्तिनापुर आदि स्थलों के उत्खनन से उत्तरी कृष्ण मार्जित मृदभाण्डों के स्तर से आहत सिक्के प्राप्त किए गए। 1853 ई. में पंजाब E. C. Bayley ने उत्खनन में मुद्रानिधि प्राप्त की थी जिसमें हिंद यवन सिक्के के साथ-साथ आहत सिक्के भी प्राप्त हुए थे जो बहुत ही घिसी हुई अवस्था में थी।

1912-13 ई. में मार्शल द्वारा तक्षशिला के उत्खनन से दो मुद्रानिधियाँ प्राप्त की थी। जिसमें हिंद यवन सिक्के, आहत सिक्के ईरानी, सिग्लोई आदि भी सम्मिलित थे। आहत सिक्के प्रयोग में लिए जाने के कारण अत्यंत घिसे हुए हुए हैं। जब कि सिकंदर व फिलीप के सिक्के लगभग नवीन हैं। फिलिप का देहान्त 317 ई.पू. में हुआ था। अतः इस निधि को 4 सदी ई.पू. के अंतिम काल में भूमि में गाड़ा गया होगा और इससे कम से कम 200 वर्ष पूर्व से यह सिक्के प्रचलन में रहे होंगे।

अतः इस प्रकार साहित्यिक व पुरातात्विक साक्ष्यों से यह सिद्ध होता है कि भारतीय सिक्के छठी सदी ई.पू. प्राचीन हैं।